डॉ वरदराज

इतिहास विभाग के.पी. कॉलेज, मुरलीगंज

(बी.एन.एम.यू., मधेपुरा)

मो.: 7549681909

ई–मेल : raj25012016@gmail.com

विषय–इतिहास (H)

वर्ग–बी.ए.पार्ट– II, पेपर– III

प्रश्न : हुमायूँ (1530–1556ई.)–

उत्तर : इतिहासकार रसब्रुक विलियम्स के अनुसार – "मुगल शासक बाबर ने अपने पुत्र के लिए ऐसा साम्राज्य छोडा जो केवल युद्ध की परिस्थितियों में ही संगठित रखा जा सकता था और शांति के समय के लिए निर्बल, रचना विहीन एवं आधार विहीन था." इसलिए हुमायूँ का पूरा शासनकाल शांति स्थापित करने में ही बीत गया।

इतिहासकार लेनपूल ने कहा था "हुमायूँ जीवनभर लङखङाता रहा और लङखङातें हुए अपनी जान दे दी।"

बाबर के चार पुत्रों (हुमायूँ, कामरान, अस्करी और हिन्दाल) में हुमायूँ सूबसे बङा था। बाबर की मृत्यु के 4 दिन पश्चात् हुमायूँ 23 वर्ष की आयु में 30 दिसंबर, 1530 को हिन्दुस्तान के सिंहासन पर बैठा। हुमायूँ मुगल शासकों में एकमात्र शासक था, जिसने अपने भाइयों में साम्राज्य का विभाजन किया था। जो उसकी असफलता का बहुत बङा कारण बना। हुमायूँ ने अपने पिता के आदेश के अनुसार कामरान को काबुल एवं कंधार, अस्करी को संभल तथा हिन्दाल को अलवर की जागीर दी। इसके अलावा अपने चचेरे भाई सुलेमान मिर्जा को बदख्शाँ की जागीर दी।

हुमायूँ को वास्तव में कठिनाइयाँ अपने पिता से ही विरासत के रूप में मिली थी, जिसे उसके भाइयों एवं संबंधी मिर्जाओं ने और बढा दिया था। प्रारंभ में बाबरके प्रमुख मंत्री निजामुद्दीन अली खलीफा हुमायूँ को अयोग्य समझकर बाबर के बहनोई मेहदी ख्वाजा को गद्दी पर बैठाना चाहता था। किन्दु बाद में अपना जीवन खतरे में समझकर उसने हुमायूँ का समर्थन कर दिया।

अफगानों से लङाई–

हुमायूँ की सबसे बङी कठिनाई उसके अफगान शत्रु थे, जो मुगलों को भारत से बाहर खदेङने के लिए लगातार प्रयत्नशील थे। हुमायूँ का समकालीन अफगान नेता शेरखाँ था, जो इतिहास में शेरशाह सूरी के नाम से विख्यात हुआ। हुमायूँ का कालिंजर आक्रमण मूलतः बहादुर शाह की बढती हुई शक्ति को रोकने का प्रयास था। हुमायूँ के

राजत्व काल में उसका अफगानों से पहला मुकाबला 1532ई. में दोहरिया नामक स्थान पर हुआ। अफगानों का नेतृत्व महमूद लोदी ने किया। परंतु अफगानों की पराजय हुई। 1532ई. में जब हुमायूँ ने पहली बार चुनार का घेरा डाला । उस समय यह किला अफगान नायक शेरखाँ के अधीन था।

शेरखाँ ने हुमायूँ की अधीनता स्वीकार ली तथा अपने लङके कुतुब खाँ के साथ एक अफगान सैनिक टुकङी मुगलों की सेवा में भेज दी। 1532ई. में बहादुर शाह ने रायसीन के महत्वपूर्ण किले को जीत लिया एवं 1533ई. में मेवाङ को संधि करने के लिए विवश किया।

बहादुरशाह ने टर्की के प्रसिद्ध तोपची रूमी खाँ की सहायता से एक अच्छा तोपखाना तैयार कर लिया था। हुमायूँ ने 1535–36ई. में बहादुर शाह पर आक्रमण कर दिया। बहादुरशाह पराजित हुआ। हुमायूँ ने माण्डू और चंपानेर के किलों को जीत लिया।

1534ई. में शेरशाह की सूरजगढ विजय तथा 1536ई. में पुनः बंगाल को जीतकर बंगाल के शासक से 13 लाख दीनार लेने से शेरखाँ के शक्ति और सम्मान में बहुत अधिक वृद्धि हुई। फलस्वरूप शेरखाँ को दबाने के लिए हुमायूँ ने चुनारगढ का 1538ई. में दूसरा घेरा डाला और किले पर अधिकार कर लिया।

15अगस्त 1538ई. को जब हुमायूँ गौङ पहुँचा तो उसे वहाँ चारों ओर लाशों के ढेर तथा उजाङ दिखाई दिया। हुमायूँ ने इस स्थान का नाम जन्नताबाद रख दिया। बंगाल से लौटते समय हुमायूँ एवं शेरखाँ के बीच बक्सर के निकट चौसा नामक स्थान पर 29जून1539 को युद्ध हुआ जिसमें हुमायूँ की बुरी तरह पराजय हुई।

हुमायूँ अपने घोङे सहित गंगा नदी में कूद गया और एक भिश्ती की सहायता से अपनी जान बचायी। हुमायूँ ने इस उपकार के बदले उसे भिश्ती को एक दिन का बादशाह बना दिया था। इस विजय के पलस्वरूप शेरखाँ ने शेरशाह की उपाधि धारण की। तथा अपने नाम का खुतबा पढवाने और सिक्का ढलवाने का आदेश दिया।

17मई1540ई. में कन्नौज (बिलग्राम) के युद्ध में हुमायूँ पुनः परास्त हो गया यह युद्ध बहुत निर्णायक युद्ध था।

कन्नौज के युद्ध के बाद हिन्दुस्तान की सत्ता एक बार फिर अफगानों के हाथ में आ गयी। अपने निर्वासन काल के ही दौरान हुमायूँ ने हिन्दाल के आध्यात्मिक गुरू मीर अली की पुत्री हमीदाबानों बेगम से 29अगस्त 1541ई. में विवाह किया कालांतर में इसी से अकबर का जन्म हुआ।

हुमायूँ द्वारा पुनः राज्य प्राप्ति–

1545ई. में हुमायूँ ने काबुल और कंधार पर अधिकार कर लिया। हिन्दुस्तान पर पुनः अधिकार करने के लिए हुमायूँ 4 दिसंबर 1554 ई. को पेशावर पहुँचा। फरवरी 1555 ई. में लाहौर पर अधिकार कर लिया। 15मई 1555 ई. को ही मुगलों और अफगानों के बीच सरहिन्द नामक स्थान पर ुद्ध हुआ। इस युद्ध में अफगान सेना का नेतृत्व सिकंदर सूर तथा मुगल सेना का नेतृत्व बैरम खाँ ने किया । अफगान बुरी तरह पराजित हुए। सरहिन्द के युद्ध में मुगलों की विजय ने उन्हें भारत का राज सिंहासन एक बार फिर से प्रदान कर दिया।

इस प्रकार 23 जुलाई 1555 ई. हुमायूँ एक बार फिर से दिल्ली के तख्त पर बैठा। किन्तु वह बहुत दिनों तक जीवित नहीं रह सका। दुर्भाग्य से एक दिन जब वह दिल्ली में दीनपनाह भवन में स्थित पुस्तकालय की सीढियों से उतर रहा ता वह गिरकर मर गया। और इस प्रकार वह जनवरी 1556ई. में इस संसार से विदा हो गया।

हुमायूँ ज्योतिष में एधिक विश्वास करता था। इसलिए वह सप्ताह में सातों दिन सात रंग के कपङे पहनता था। मुख्यतः वह इतवार को पीले, शनिवार को काले एवं सोमवार को सफेद रंग के कपङे पहनता था। हुमायूँ अफीम का बहुत शौकीन था। मुगल बादशाहों में हुमायूँ ही एकमात्र शासक था जिसने अपने भाइयों में साम्राज्य का विभाजन किया था।

हुमायूँ को अबुल फजल ने इन्सान–ए–कामिल कहकर सम्बोधित किया है। बैरम खाँ का योग्य एवं वपादार सेनापति था, जिसने विर्वासन तथा पुनः राजसिंहासन प्राप्त करने में बङी मदद की थी।

हुमायूँ के बारे में लेनपूल ने लिखा कि "हुमायूँ गिरते दृ चढते इस जीवन से मुक्त हो गया, ठीक उसी तरह जिस तरह तमाम जिन्दगी वह गिरते– पङते चलता रहा था।"